RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

जनमत निर्माण में प्रिंट मीडिया की भूमिका : ब्रिटिश काल के विशेष सन्दर्भ में

एकता

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय (पंजाब)

शोध सारांश– विचारों और भावनाओं को शाश्वत स्वरूप प्रदान करने के लिए लिखित शब्दों की भूमिका सदियों पुरानी है। इसका प्रारम्भिक इतिहास पाषाणकाल में गुफाओं में प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य द्वारा बनाये गये भित्ति चित्रों में तलाशा जा सकता है। भय से लेकर आनंद तक ही हर क्षणिक भावनाओं को चित्रों ने युगों बाद आज भी शाश्वत कर रखा है। तमाम इलेक्ट्रानिक माध्यमों के अस्तित्व में आने के बावजूद लिखित शब्दों की महिमा आज भी बनी हुई है। आज भी गांव के चौराहों या चाय की दुकानों में आप को ऐसी चर्चा करते हुए लोग मिल जाऐंगे जो बातों में ताल ठोंक कर कह रहे होंगे–यकीन न हो तो देख लो अखबार में लिखा है। यकीनन सिर्फ अखबार में लिख देने से असत्य सत्य नहीं हो जाता लेकिन यह जनविश्वास है कि अखबारों में लिखा पत्थर की लकीर होता है। अखबार ने यह विश्वसनीयता एक दिन में नहीं अर्जित की है। इसके पीछे न जाने कितने योद्धा पत्रकारों की सदियों पुरानी तपस्या है। गांधी से लेकर राजाराममोहन राय तक न जाने कितने पत्रकारों ने स्वयं को तिल–तिल कर जलाया है।

संकेताक्षर– प्रिंट, मीडिया, इलेक्ट्रानिक, पत्रकार, जनमत निर्माण, समाचार पत्र।

शोध विस्तार– सम्पूर्ण लोकतंत्र जिस एक शब्द की धुरी पर घूमता है, वह है जनमत। जनमत ही शक्ति की वह कुंजी है जिसके जरिये हाशिये पर खड़े लोग सत्ता के केन्द्र तक पहुंच जाते है और जनमत ही वह ताकत है जो यदि सत्ता के शिखर पर बैठे व्यक्ति के खिलाफ हो जाए, तो उसे चुटकियों में धराशायी कर सकती है। इतिहास गवाह है कि दुनिया के अधिकांश देशों ने जिन देशों में लोकतंत्र नहीं रहा, वहां भी जनता के दबाव में ही लोकतंत्र का पथ प्रशस्त हुआ है। ब्रिटेन में ताकतवर राजशाही को घुटने टिकवाकर राजतंत्र को महज बर्मिघम पैलेस तक सीमित कर देना या ईजिप्ट अमेरिकी सरपरस्ती का दावा करने वाले हुस्नी मुबारक का निहत्थे लोगों की भीड़ से डरकर भूमिगत हो जाना, जनमत की ताकत का ही नायाब नमूना है। यानी लोकतंत्र का जन्म ही जनमत की इस शक्ति के बल पर प्राप्त हुआ है और यह तथ्य स्वयंसिद्ध है कि लोकतंत्र का सफल संचालन जनमत के बिना कदापि संभव नहीं है।

दूसरी तरफ मीडिया वह महाशक्ति है जो दुनिया को चुपचाप बदल रही है। इस बदलाव को संभव है कि उस काल में मौजूद लोग समझ न पायें, मगर उस कालखण्ड से परे जाने पर इस बदलाव का सहज ही बोध हो जाता है। इतिहास के पन्ने मीडिया की इस शक्ति के गवाह रहे है। इसने विचारों को बदला है, व्यवहार को नये सांचे में ढ़ाला है। न जाने कितनी क्रांतियों को इसने जन्म दिया है। ताकतवर जारशाही को धूल चटा देने में दास कैपिटल की भूमिका हो या ईजिप्ट में क्रान्ति में फेसबुक का योगदान हो, सभी मीडिया की इसी शक्ति का गुणगान करते है।[1]

मीडिया को यह शक्ति मिलती कहां से है। संभवतः इसकी ताकत का स्त्रोत जन में ही छिपा है। जनभावनाओं को जितनी ईमानदारी से मीडिया अभिव्यक्त करेगा उतनी ही इसकी स्वीकार्यता बढ़ेगी। इसी स्वीकार्यता के सहारे मीडिया के माध्यम से अभिव्यक्त तथ्यों और विचारों के प्रति लोगों की ग्राह्यता का विस्तार होगा, जिससे कालान्तर में जनमत का निर्माण होता है। दूसरे शब्दों में यदि कहें तो मीडिया जन से ही शक्ति लेकर जनमत का निर्माण करती है। यह कार्य जितना कहना सरल है व्यवहार में उतना ही कठिन। किसी भी व्यक्ति के लिए स्वयं अपनी ही अपेक्षाओं पर खरे उतर पाना आसान नहीं होता। ऐसे में विभिन्न जाति, धर्म, मत, सम्प्रदाय और विश्वासों में बंटी जनता की अपेक्षाओं पर खरे उतरना कितना कठिन है इसका मात्र अंदाजा ही लगाया जा सकता है। पर मीडिया ने इस कार्य को कर दिखाया है। यही कारण है कि एकतरफ छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में अखबार की पूजा होती है तो दूसरी तरफ दुनिया का बड़े से बड़ा तानाशाह मीडिया से भय खाता है।[2]

लेकिन दौर बदलने के साथ मीडिया की भूमिका भी बदलती है। मीडिया के लिए मिशन का दौर बीते दौर की बात हो गयी है। पूंजी का असर मीडिया में सर्वमान्य सत्य बन गया है। आजादी के दौर के समय भारतीय पत्रकारिता संसाधन हीन थी। अखबारों का जीवन काल कितने दिन का होगा ये भी कहना मुश्किल था। लेकिन तब भी तमाम छोटे–छोटे अखबारों ने वह कर दिखाया, जो इतिहास में दर्ज है। वरिष्ठ पत्रकार अखिलेश मिश्र लिखते है–

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

''वर्गस्वार्थ त्याग कर राष्ट्रीय मानवीय और सामाजिक प्रश्न इन छोटे अखबारों ने उठाये थे। ये कम साधन और कम ग्राहकों के पत्र थे लेकिन इनकी दृष्टि व्यापक थी। आज बड़े साधन, बड़ी ग्राहक संख्या वाले पत्रों की दृष्टि कूप मंडूक है। उन छोटे पत्रों ने वह आग लगायी थी कि ब्रिटेन की रानी का तख्ता हिल गया था।''[3]

यानी दौर बदल चुका है। आज के दौर में मीडिया जनमत निर्माण में किस तरह अपनी भूमिका निभा रहा है, यह फिर जांचने का विषय बन गया है। खासकर चुनाव जो लोकतंत्र का महापर्व है, उनमें मीडिया की भूमिका का आंकलन करना बेहद महत्वपूर्ण हो गया है।

यह लिखित शब्दों की ही शक्ति थी कि महान सामाजिक क्रांतिकारी राजाराम मोहन राय ने अखबारों को अपनी क्रांति का माध्यम बनाया। स्वयं उनके द्वारा संपादित या उनके प्रभाव से प्रकाशित अखबारों की पूरी श्रंखला ही निकल पड़ी। मिरात उल अखबार संवाद कौमुदी, कैलकटा जनरल समेत न जाने कितने अखबार के खुरदरे पन्ने पर लिखे शब्दों को महान गरिमा प्रदान की।

1857 में भारत का स्वाधीनता सम्मान तलवारों और बन्दूकों के साथ अखबारों के माध्यम से भी लड़ा गया था। पैगाम ऐ आजादी के नाम से प्रकाशित इस अखबार ने हिन्दू–मुस्लिम एकता की ऐसी बुनियाद रखी थी, कि फिरंगी कांप गये थे।

बाद में स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है का सिंहनाद करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने अपनी क्रांति का माध्यम समाचार पत्रों को ही बनाया। मराठी में प्रकाशित केसरी और अंग्रेजी में प्रकाशित मराठा ने क्रांति का बिगुल बजा दिया। बाद में महात्मा गांधी ने भी अपनी अहिंसक क्रांति का माध्यम अखबारों को ही बनाया। वैसे साबरमती का यह संत दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान अपने अखबार इंडियन ओपीनियन की ताकत से गर्वोन्मत्त अंग्रेजी सरकार का सिर झुका दिया था। भारत में भी उनके अखबारों यंग इण्डिया, हरिजन आदि ने क्रान्ति की ऐसी अलख जगाई की उस ब्रिटिश सत्ता को अपना बोरिया बिस्तर बांधना पड़ा जिसके बारे में पैमस्टन ने कहा था ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नहीं हो सकता था।[4]

अन्याय के इस काले सूरज को डुबाने में क्रांतिकारियों की भूमिका भी कुछ कम नहीं थी। प्रयाग से सशस्त्र क्रांति समर्थक स्वराज अखबार ने जैसा विज्ञापन प्रकाशित किया वैसा उदाहरण शायद ही विश्व में कहीं प्राप्त हो। तभी प्रयाग से प्रकाशित होने वाले पत्र स्वराज में विज्ञापन निकाला गया ''चाहिये एक सम्पादक, वेतन दो सूखी रोटी, एक गिलास पानी और सम्पादकीय के लिए बीस साल कैद।''[5]

अंग्रेजी शोषण का आलम यह था कि कहा जाने लगा अच्छा पत्रकार वह है जो किसी अखबार में कम से कम दिन रहे और अच्छा अखबार वह है जो जल्द से जल्द बंद हो जाए। हालांकि तमाम ऐसे जीवन अखबार भी हुए जो शोषण की अति सहकर भी जीवित रहे। आगरा से प्रकाशित होने वाला सैनिक ऐसा ही अखबार था। कृष्ण दत्त पालीवाल, श्रीराम शर्मा जेसे पत्रकारों के योगदान की प्रशस्ति करते हुए महान पत्रकार एम चेलापति राव ने कहा है ''इतने आघातों के बाद भी इस अखबार का जीवित रह जाना एक चमत्कार ही था। इसके पीछे यकीनन ऐसे पत्रकारों की साधना थी, जिन्होंने किसी भी परिस्थिति में सिर नहीं झुकाया।''

इतिहास की नजर में हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ 30 मई 1826 से है जब पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से हिन्दी का प्रथम पत्र उदंत मार्तण्ड आरम्भ किया था। पर वास्तविकता में हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ किया भारतेन्दु हरिशचन्द ने। उन्होंने सच्चे अर्थ में पत्रकारिता को जन से जोड़ने में अत्यंत अहम भूमिका निभायी। निश्चित रूप से उनके पत्रों ने देश में सामाजिक राजनीतिक मुद्दों पर जनमत बनाने के कार्य का वास्तविक श्रीगणेश किया। उनके द्वारा आरम्भ पत्र कवि वचन सुधा का आदर्श था स्वत्व निज भारत गहै। तमाम बन्धनों के बावजूद उनकी निर्भीकता का आकलन हरिशचन्द मैगजीन में छपे उनके निबंध हिन्दूज क्वेश्चन टू यूरोपियन के निम्न अंश से लिया जा सकता है ''आप इंग्लैंड के हो या हमारे। यदि वहां के हो तो क्यों घर बार छोड़कर यहां आ बसे। यदि हमारे हैं तो क्यों इस देश को इतनी पीड़ा दे रहे है।''[6]

1900 ईसवी में हिन्दी पत्रकारिता के आकाश पर सविता के तेज की तरह सरस्वती पत्रिका का उदय हुआ। 1903 में इस पत्र के सम्पादन का दायित्व संभाला महावीर प्रसाद द्विवेदी ने, जिनके विषय में प्रख्यात विद्वान राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है।
''किसी एक भाषा के बारे में किसी एक व्यक्ति और पत्रिका ने उतना काम नहीं किया जितना हिन्दी भाषा के लिए महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनकी पत्रिका सरस्वती ने योगदान दिया है। उनके योगदान के कारण पत्रकारिता का एक पूरा युग उनके नाम से जाना जाता है। सरस्वती मात्र एक साहित्यिक पत्रिका ही नहीं थी, बल्कि इसने नारी उद्धार से लेकर राजनीतिक आंदोलन के पक्ष पर जनमत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यहां तक कि कार्टूनों के जरिये जनचेतना जाग्रत करने में इस पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1904 से सरस्वती के हर अंक में कार्टून उसकी खास पहचान बन गये थे।''[7]

स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूंगा ऐसा सिंहनाद करने वाले लोकमान्य तिलक के पत्रकारिता की प्रखरता के जरिये इसे जन–जन से जोड़ दिया। उनके राजनीतिक विरोधी गोपाल कृष्ण गोखले का मानना था–समाचार पत्रों के माध्यम से ऐसा वीरोचित संघर्ष तिलक से पहले ज्ञात नहीं था। जनसंचार शब्द जब प्रचलित भी नहीं था तब उसे जन–जन तक पहुंचाने वाले तिलक ही थे। आर.सी. मजुमदार के शब्दों में तिलक का पत्र केसरी उकसाता था, जबकि मराठा समझाता था। केवल सप्तक का ही भेद था, राग एक था।

क्रांति में आध्यात्मिक तेज और अध्यात्म में क्रांति लाने वाले योगिराज अरविन्द की पत्रकारिता को वन्दे मातरम् नामक पत्र से एक नयी ऊँचाई तक पहुंचाया। इस पत्र की लोकप्रियता का आलम यह था कि बंगाल के बाहर भी लोग इसे पढ़ने के लिए लालायित रहते थे। इसी के चलते विशेषकर इस पत्र का साप्ताहिक संस्करण निकालना पड़ा। स्टेट्समैन पत्र ने उनके विषय में लिखा

था ''वन्देमातरम् में प्रकाशित लेख यद्धपि राजद्रोह से भरे रहते है लेकिन अरविन्द की कलम के कौशल के कारण उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाई नहीं की जा सकती।''[8]

हिन्दी पत्रकारिता के साथ अंग्रेजी अखबारनवीसी को नयी दिशा देने वाले पंडित मदन मोहन मालवीय 1861–1946 ने हिन्दी पत्रकारिता के साथ अंग्रेजी पत्रकारिता को भी नई दिशा दी। कलकत्ता में इनके ओजस्वी व्याख्यान को सुनकर राजा रामपाल सिंह ने उनको विशुद्ध दैनिक के प्रथम पत्र हिन्दोस्थान के संपादन के लिए कालाकांकर आमंत्रित किया। इस अखबार के जरिये महामना ने गांवों की समस्या को जन–जन तक पहुंचाकर उनके खिलाफ व्यापक जनमत निर्माण का कार्य किया। 1907 में उन्होंने अभ्युदय पत्र आरंभ किया। 1909 में आपके जरिये अंग्रेजी अखबार लीडर शुरू हुआ। 1911 में मर्यादा मासिक आरंभ किया और 1924 में खस्ता हालत में चल रहे हिन्दुस्तान टाइम्स को खरीद कर उसका पुनः प्रकाशन शुरू किया जिसके जरिये प्रायः सत्ता की चाटुकारिता कर अंग्रेजी पत्रकारिता को नयी दिशा मिली।

पत्रकारिता से जन–जन को जोड़ने का जो काम राष्ट्रपिता बापू ने किया, उसकी तुलना होना मुश्किल है। उनका मानना था कि आंतरिक शक्ति पर आधारित कोई भी संघर्ष अखबार के बिना नहीं चलाया जा सकता। 1903 में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपीनियन पत्र का श्रीगणेश किया। इस पत्र में उन्होंने लिखा ''पत्रकारिता का पहला मकसद जनभावनाओं को समझना और उसे अभिव्यक्ति देना है। दूसरा कार्य वांछित भावनाओं को जाग्रत करना और तीसरा दायित्व निर्भीक तरीके से गड़बडियों को उजागर करना है।''[9]

महात्मा का यह पत्र अंग्रेजी हिन्दी के साथ गुजराती और तमिल में भी छपता था। हालात ये थे कि हाथ से चलने वाली प्रिंटिंग मशीन का हैंडल चलाने के लिए गांधी समेत तमाम लोगों को घंटों पसीना बहाना पड़ता था, लेकिन पत्र जिस तरह गांधी द्वारा आरंभ आन्दोलन के पक्ष में जनमत बना रहा था, उसके लिए महात्मा हर कष्ट उठाने को तैयार थे। स्वदेश लौटने के बाद बापू के सामने राजनैतिक आजादी के साथ–साथ सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति का महान लक्ष्य था और यह कार्य जनमत निर्माण बिना कदापि संभव नहीं था और इस जनमत निर्माण के लिए अहिंसा के योद्धा का अद्भुत अस्त्र बनी पत्रकारिता। 1917 में बापू ने नवजीवन और 1918 में यंग इंडिया पत्र आरंभ किया। रौलेट एक्ट के खिलाफ उन्होंने बिना पंजीकरण के सत्याग्रही पत्र निकाला। 1933 में उन्होंने हरिजन पत्र आरंभ किया जिसका एक–एक शब्द उनका स्वयं का लिखा हुआ होता था।

1913 में महाराणा प्रताप के नाम पर कानपुर से अद्वितीय पत्र आरंभ करने वाले गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने पत्र में स्पष्ट घोषणा की–''जिन्हें काम करना है वे गांवों की ओर मुड़े।''[10] 1913 में सांप्रदायिक सद्भाव के लिए प्राण निछावर करने वाले इस महान पत्रकार के विषय में प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लिखा था–''मर कर उन्होंने जो सीख दे दी वह हम बरसो जिंदा रहकर क्या दे पायेंगे।''[11]

हिन्दी बंगवासी के जरिये कोलकाता से हिन्दी पत्रकारिता आरंभ करने वाले अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने अपनी क्रांतिकारी कलम के जरिये स्वतंत्रता की तड़प को जनमानस तक पहुंचाया। 1907 में लोकमान्य तिलक से प्रभावित होकर नृसिंह पत्र आरंभ किया। उनकी कलम की एक बानगी– ''आओ ब्रिटिश सत्ता को दिखा दें कि हम हिन्दुस्तानी मुर्दे नहीं है और तुम्हें तुम्हारे पाप कर्मो का फल चखाने के लिए बद्ध परिकर है।''[12] 1905 में बंगभंग के समय देश में क्रांतिकारी चेतना जगाने के लिए आरंभ हुआ युगान्तर जिसे अरविन्द के भाई वारीन्द्र कुमार घोष और स्वामी विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्र नाथ दत्त। 1909 में इस पत्र का अंतिम अंक निकला जिसका मूल्य रखा गया फिरंगीर कांचेर गाथा यानी अंग्रेज का कटा हुआ सर। 1907 में प्रयाग से आरंभ हुआ अनूठा पत्र स्वराज। इसके आठ संपादकों ने देशभक्ति के कारण कुल 125 साल कैद झेली

पत्रकारिता की वृहदत्रयी बाबा राव विष्णु पराड़कर ने 1920 में आज पत्र के साथ संपादकीय में जनता को झखझोड़ते हुए लिखा– ''हम लोग पूर्व गौरव के गान गाते है और भविष्य के स्वप्न देखा करते है पर आज का विचार नहीं करते जिससे भारत को सर्वदा आज का स्मरण रहे इसलिए आज से ही आपके सामने उपस्थित हो रहे है।''[13]

कृष्णदत्त पालीवाल ने 1925 में सैनिक पत्र आरंभ किया जो अपने नाम के मुताबिक ही जुझारू था। पत्र को जब ब्रिटिश सत्ता ने प्रकाशन से रोक दिया तब श्रीराम शर्मा आचार्य के नेतृत्व में इसके दीवार संस्करण निकलने आरंभ हो गये। नेशनल हैराल्ड के संपादक के विक्रम राव ने इस पत्र के विषय में लिखा था– ''पहली पंक्ति में लड़ने वाले सिपाही के रूप में सैनिक ने इतने प्रहारों को सहा कि इसका जीवित रह जाना एक आश्चर्यजनक घटना है। इसके पीछे ऐसे योग्य और वीर पुरूष रहे है, जिन्होंने कभी हार नहीं मानी।''[14]

निष्कर्ष– इस तरह सार रूप में कहा जा सकता है कि भारत में ब्रिटिश सत्ता के दौरान प्रिंट मीडिया ने जनमाध्यमों के जरिये सामाजिक–राजनैतिक मसलों पर सशक्त जनमत का निर्माण किया। माना जाता है कि अखबारों का यह योगदान वह अहम कारण है जिसके चलते ही प्रिंट मीडिया को समाज में एक अलग तरह की विश्वसनीयता प्राप्त है और इसी कारण इलेक्ट्रानिक माध्यमों से मिल रही चुनौती के बावजूद यह पूरी ताकत से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

संदर्भ सूची–

1. ओम गुप्ता, मीडिया साहित्य और संस्कृति, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली–पृ.9
2. जावरीमल पारीख, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली–पृ.73
3. पी.सी. पातंजलि, संचार क्रांति और विश्व जनमाध्यम, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ. 21
4. जे. चतुर्वेदी, टेजलीविजन संस्कृति और राजनीति, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली– पृ219
5. चतुर्वेदी जगदीश्वर, जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.2
6. डॉ. तिवारी अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पृ. 3
7. डॉ. अरूण कुमार, विश्व मीडिया बाजार, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली पृ. 33
8. एस. भानावत, सांस्कृतिक चेतना और जन पत्रकारिता, यूबीएच–पृ. 19
9. आर.एस.जोशी मीडिया और बाजारवाद, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ. भूमिका से।
10. भौमिक संघमित्रा, हर मर्ज की दवा एक क्लिक, रसरंग दैनिक भास्कर, 1 अप्रैल 2007
11. प्रिया सिंह, अभिव्यक्ति की आजादी, कम्प्यूटर कैरियर, दिसम्बर, 2007
12. बी.डी. शर्मा, ब्लॉग मुनि खबर लाए, दैनिक भास्कर, 26 अप्रैल 2006
13. लक्ष्मण रॉय, दुनिया मेरी मुट्ठी में, आउटलुक, 16 अक्टूबर 2006

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)